

अमर शहीद क्रांतिवीर चंद्रशेखर आज़ाद की शहादत को लाल सलाम

सत्यवीर सिंह

'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' के कमांडर-इन-चीफ, अमर शहीद क्रांतिवीर चंद्रशेखर आज़ाद की शहादत की पूर्व संध्या पर, उन्हें क्रांतिकारी सलाम और उनकी शहादत को सम्मान देने के लिए, एक मजदूर सभा, रविवार, 26 फरवरी को पब्लिक पार्क, सेक्टर 21 डी में सम्पन्न हुई. 'क्रांतिकारी मजदूर मोर्चा, फरीदाबाद' ने, शहीद-ए-आज़म भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव के शहादत दिवस, 23 मार्च तक एक कार्यक्रम लिया हुआ है, जिसमें उनके कार्यकर्ता, पर्चा लेकर, फरीदाबाद की हर मजदूर बस्ती और हर कारखाने में जा रहे हैं, जिससे अमर क्रांतिकारियों के विचारों को, आम लोगों तक पहुँचाया जा सके, और शहीदों के अधूरे ख़ूब को पूरा करने के अभियान से समूचे समाज को जोड़ा जा सके. 'शहीद माह' का समापन 23 मार्च को, सामुदायिक केंद्र, आज़ाद नगर, सेक्टर 24 औद्योगिक क्षेत्र से मोर्चा निकालते हुए, वीनस पार्क में आम सभा के साथ होगा. सभा का संचालन क्रा म मो के अध्यक्ष कॉमरेड नरेश ने किया. ऐसी तेज़ धूप में, खुले में बैठकर सभा में भाग लेने आए साथियों का स्वागत करते हुए, उन्होंने अमर शहीदों के विचारों को, जन-जन तक ले जाने के लिए ज़ारी अभियान के महत्त्व पर प्रकाश डाला. आज दूसरे और सच्चे आज़ादी आन्दोलन को शुरू करने की दरकार है. देश की परिस्थितियाँ दिनोदिन गंभीर होती जा रही हैं. लगभग तीस साल पहले की बात को याद करते हुए उन्होंने बताया, कि एक वक्त वो भी था, जब किसी मगरूर कारखानेदार द्वारा मजदूर को थप्पड़ मारने पर, कैसे पूरा शहर ऐसे बंद हो जाता था जैसे कर्फ्यू लग गया हो. कसूरवार मालिक पर कठोर कार्यवाही होने पर ही चक्का घूमता था. आज मजदूरों के अपमानित होने की खबरें आम हो गई हैं.

क्रा म मो के महासचिव कॉमरेड सत्यवीर सिंह ने, अमर शहीद क्रांतिवीर चंद्रशेखर आज़ाद के जीवन और उनकी सीखों पर चर्चा का आगाज़ किया. कैसे एक निर्धन ब्राह्मण परिवार में जन्मे, चंद्रशेखर तिवारी, बनारस में संस्कृत में पारंगत आचार्य बनने की बजाए, 'क्रांतिवीर चंद्रशेखर आज़ाद' बन गए, जिनके लिए देश की आज़ादी के सामने उनके जीवन

का कोई मूल्य नहीं था. मात्र 15 साल की उम्र के इस बालक ने, गांधीजी के असहयोग आन्दोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया. 'चौरी-चौरा' कांड के बाद, गांधीजी द्वारा आन्दोलन वापस लेने के निर्णय से झल्लाए चंद्रशेखर आज़ाद, आज़ादी आन्दोलन की क्रांतिकारी धारा की ओर मुड़ गए और फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा. 'हिंदुस्तान रिपब्लिकन आर्मी' में 'सोशलिस्ट' शब्द जुड़ा और उन्हें उसका कमांडर-इन-चीफ चुना गया. जो लोग कहते हैं कि मजदूर तो बहुत कम पढ़े-लिखे हैं, धर्म मानते हैं, वे कैसे इकट्ठे होकर लड़ सकते हैं? वे, दरअसल, देश के इस अमर सपूत को नहीं पढ़े हैं. आज़ाद, बिस्मिल और अशफ़ाक, आजीवन आस्तिक रहे, लेकिन उनके बलिदान और कार्यकर्ताओं से प्रेम सबके लिए मिसाल हैं. आज, मजदूरों के शोषण-उत्पीड़न की इन्तहा हो चुकी है. हमें अपने अमर शहीदों के पैगाम को हर तरफ ले जाने की ज़रूरत है. 'हरियाणा रेहड़ी-पटरी संघ' के प्रांतीय अध्यक्ष कॉमरेड जगराम सिंह, सभा में पहुँचने वाले, पहले व्यक्ति थे, लेकिन अचानक किसी ज़रूरी काम से उन्हें सभा छोड़कर जाना पड़ा.

प्रख्यात जर्मन भाषाविद, साप्ताहिक 'तरंग' के संपादक और प्रतिष्ठित संस्कृतिकर्मी, ज्योति संग ने याद किया, कि कैसे पिछली सदी के सत्र के दशक में बल्लभगढ़ से आगे, झाड़ सेंटली गाँव से बदरपुर तक लाल झंडे ही नज़र आते थे. ऐसा आभास होता था, मानो फरीदाबाद इण्डिया में ना होकर सोवियत संघ या चीन का हिस्सा है. आज क्रांतिवीर चंद्रशेखर आज़ाद की शहादत को याद करने के अहम मुद्दे पर भी मात्र 60-70 लोग मौजूद हैं. उन्होंने, लेकिन आशा व्यक्त की कि नगर के मजदूर दूध से जले हुए हैं, इसलिए भरोसा नहीं कर रहे. अगर क्रांतिकारी मजदूर मोर्चा हिम्मत से अपने रास्ते पर डटा रहा, तो फिर से वही आलम नज़र आएगा. कॉमरेड रिम्पी ने अपने वक्तव्य में लोकप्रिय भोजपुरी गायिका नेहा राठौर को मिले पुलिस नोटिस का मुद्दा ज़ोरदार ढंग से उठाया. उन्होंने कहा कि ये सरकार इस कदर डरी हुई है कि गीत की चार लाइन भी बरदाश्त नहीं कर सकती. किस बात का डर सताता है इन्हें? इनके कारनामे ही ऐसे हैं जो इन्हें डराते रहते हैं. क्या लोग इनके डर से लिखना, पढ़ना, गाना छोड़



देंगे? सवाल ही पैदा नहीं होता. 'क्रांतिकारी मजदूर मोर्चा', नेहा राठौर के साथ खड़ा है, उन्होंने आश्चर्य किया. क्रा म मो के कोषाध्यक्ष कॉमरेड छोटेलाल ने भी अपने विचार रखे.

'समाजवादी लोक मंच' की ओर से दो वरिष्ठ साथी इन्दिरापुरम से इस सभा में भाग लेने पहुंचे थे. कॉमरेड धर्मेन्द्र आज़ाद ने अपनी बात रखते हुए प्रश्न किया, क्या मजदूर के आलावा, कोई व्यक्ति आज 10,000 रु प्रति माह में अपने पूरे परिवार का महीनेभर खर्च चलाने का बजट बनाकर दिखा सकता है? मजदूरों पर आज जो गुजर रही है, बस वे ही जानते हैं. हर रोज मजदूरों के संघर्ष ज़ारी हैं, और ये ज़ारी ही रहने वाले हैं, जब तक मौजूदा अन्यायपूर्ण व्यवस्था का खात्मा नहीं हो जाता.

बुज विहार, गाज़ियाबाद से सभा में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने पहुंचे, वरिष्ठ साथी समरपाल सिंह ने एक निश्चित ढर्रे में चल रही बुर्जुआ राजनीति पर चुटकी लेते हुए कहा, कि कभी-कभी तो शासक पार्टी के 'अर्थशास्त्री' बजट प्रस्तुत होने से पहले ही, टी वी बाईट देनी शुरू कर देते हैं कि बजट गरीबों का उद्धार करने वाला है!! विपक्षी भी, अपनी सरकार वाले राज्य में बिलकुल ऐसा ही व्यवहार करते हैं. बजट को 'महान' और 'कूड़े का ढेर' बताने वाली जमातें, अपना-अपना काम यंत्रवत करती जाती हैं. हमें इस 'राजनीति' से क्या लेना? मजदूरों को तो अपनी राजनीति करनी होगी, अपना मीडिया खड़ा करना होगा. समरपाल जी ने, दिल्ली से

प्रकाशित वैकल्पिक मीडिया के अख़बार 'आईना इन्डिया' की प्रतियाँ भी मजदूरों को पढ़ने के लिए दीं. उनके द्वारा पढ़ी गई, अदम गोंडवी की ये नज़्म कितनी मौजू है-

तुम्हारी फाइलों में गाँव का मौसम गुलाबी है
मगर ये आंकड़े झूठे, ये दावा किताबी है
उधर जम्हूरियत का ढोल पीटे जा रहे हैं वो
इधर पर्दे के पीछे बर्बरियत है, नवाबी है
लगी है होड़-सी देखो अमीरी ओ गरीबी में
ये गांधीवाद के ढांचे की बुनियादी खराबी है
तुम्हारी मेज चांदी की, तुम्हारे जाम सोने के

यहाँ जुम्न के घर में आज भी फूटी रक़ाबी है

लखाना फुटवैयर, कंपनी से 'स्वेच्छा से स्तीफा' दे चुके, और पूरी हिम्मत से अपने बकाया वसूलने के लिए लड़ रहे, जुझारू कॉमरेड रजनीश ने बताया, कि देश में मजदूर जिस चक्की में पिस रहे हैं, वे इसके भुगतभोगी हैं. दिन-रात मेहनत कर इन लखानियों के लिए, 7 साल तक जूते-चप्पल के अम्बार और इनके मुनाफ़े के पहाड़ खड़े करने वाले मजदूर, आज अपने बकाया वेतन, ओवरटाइम, बोनस के भुगतान को ही नहीं, बल्कि उनके वेतन से जो पीएफ का पैसा काटा गया है, उसकी वसूली के लिए भी दर-दर भटक रहे हैं. 'कानून अपना काम कर रहा है', पीएफ विभाग के अधिकारियों को ये बोलने में भी शर्म नहीं आती. जन साहित्यकार, कॉमरेड गजेन्द्र रावत ने अपनी तीन कविताएँ सुनाई. सबसे ज्यादा दाद, उन्हें 'भूख' कविता पर मिली-

इस धरती पर एक देश ऐसा भी है
जहाँ मानते हैं लोग स्त्री के भूखा रहने से

बढ़ जाती है आयु पुरुष की...
इसी धरती पर इसी देश में ठोस होता जा रहा है

एक सत्य करोड़ों लोगों के भूखा रहने से

बन गया है सचमुच, एक व्यक्ति दुनिया का नंबर वन अमीर...

फरीदाबाद से प्रकाशित, मजदूरों के लोकप्रिय साप्ताहिक 'मजदूर मोर्चा' के संपादक कॉमरेड सतीश कुमार ने सभा से पूछा. क्या आप जेबकतरों के काम करने के तरीके के बारे में जानते हैं? वह किसी न किसी बहाने, अपने शिकार का ध्यान दूसरी तरफ लगा देता है, और जैसे ही वह व्यक्ति अपनी जेब के बारे में बे-खबर होता है, जेब काट कर निकल लेता है. मोदी सरकार हो या खट्टर सरकार, इनके काम करने का तरीका भी बिलकुल वही है. वो देखो- गाय माता कितने कष्ट झेल रही है; वो देखो- मुसलमानों की आबादी कितनी तेजी से बढ़ रही है, वे तुम्हें खा जाएँगे; वो देखो हमारा भव्य राम मंदिर!! आप उधर पिल पड़ते हैं और आपकी जेब में जो कुछ भी बचा है, उसे निकालकर अडानी-अम्बानी की जेब में डाल दिया जाता है. अब ये आप पर निर्भर है कि कब तक अपनी जेब कटवाते हो, या इकट्ठे होकर इन जेबतराशों को ठिकाने लगाते हो. भाजपा-संघ का काम करने का ढंग, गुण-

धर्म तो बदलने से रहा. सभा के अंतिम वक्ता, इंडियन पब्लिक सर्विस एम्प्लॉइज फेडरेशन (IPSEF) के राष्ट्रीय उप-महासचिव और दिल्ली राज्य सचिव, कामरेड राकेश भदोरिया रहे. उन्होंने बताया कि सभी सरकारी कर्मचारी बेहद तनाव में और घबराहट के माहौल में काम कर रहे हैं. किसी को भी अपने काम की सुरक्षा नहीं रही. सरकार पुरानी पेंसन बहाल ना करने पर अड़ी हुई है. हर जगह भर्तियाँ ठेके पर ही हो रही हैं, जिन्हें किसी भी अधिकार की गारंटी नहीं. ट्रेड यूनियन आन्दोलन को नष्ट किया जा रहा है. अमर शहीद क्रांतिकारियों के सन्देश को कोने-कोने में ले जाना होगा, जिससे पूंजी के राज के खात्मे के असली आज़ादी आन्दोलन को कामयाब बनाया जा सके. सभा के शुरू, मध्य और अंत में, दो प्यारे बच्चों, स्वाती और स्नेह के गाए क्रांतिकारी गीतों; 'पढ़ना-लिखना सीखो, ओ मेहनत करने वालो', 'किताबें कुछ कहना चाहती हैं' और 'देश हमारा धरती अपनी...' ने सबका दिल छू लिया. ज़ोरदार नारों के साथ और शहीद दिवस 23 मार्च तक मजदूर संपर्क अभियान ज़ोरदार ढंग से चलाते हुए, 23 मार्च के मोर्चे-सभा कार्यक्रम को कामयाब बनाने के अहद के साथ, समाप्त होने से पहले, मजदूर सभा ने ये 3 प्रस्ताव भी पारित किए;

1) देश में बे-रोज़गारी अभूतपूर्व है और उसमें हरियाणा नंबर 1 है (35 प्रतिशत). युवाओं को रोज़गार देने की जगह, सरकार उन्हें 'गो रक्षकों' के नाम पर दंगाई और फासिस्ट ब्रिगेड के सैनिक बना रही है. जूनैद और नासिर की नृशंस हत्या, समाज को शर्मसार करने वाली है. इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट के मुताबिक, उनके बर्बर हत्यारे, असलेह लेकर, पुलिस के साथ ऐसी वारदातों में नियमित रूप से लिप्त रहे हैं. हत्यारों पर कठोर कार्यवाही की मांग की जगह, उनके बचाव में महापंचायतें आयोजित हो रही हैं. 'गौ रक्षा टास्क फोर्स' को तत्काल समाप्त करो. जूनैद और नासिर की जघन्य हत्या और गो रक्षा के नाम पर नंगे फासीवादी नाच के विरुद्ध होने वाले जन-आंदोलनों में 'क्रांतिकारी मजदूर मोर्चा' पूरी शिद्दत से, बिना शर्त, शामिल रहेगा.

2) फरीदाबाद में कोई भी श्रम कानून लागू नहीं हो रहा. सम्बंधित विभाग स्पष्ट रूप से बता रहे हैं कि उन्हें हरियाणा सरकार का लिखित आदेश है, कि श्रम कानून लागू ना करने वाले किसी भी कारखाने पर, सरकार से लिखित अनुमति लिए बगैर, और सम्बंधित कारखानेदार को पूर्व सूचना दिए बगैर, कोई कार्यवाही ना की जाए. हम हरियाणा सरकार के, इन घोर मजदूर-विरोधी और मालिकों को मजदूरों का खून निचोड़ने की छूट देने वाले, ऐसे आदेशों के विरुद्ध अपना तीव्र आक्रोश ज़ाहिर करते हैं. सरकार से इन आदेशों को तुरंत वापस लेने और सभी श्रम कानूनों, पीएफ, ईएसआईसी कानूनों का अनुपालन सुनिश्चित करने की मांग करते हैं. ऐसा ना होने पर तीव्र जन-आन्दोलन आयोजित किए जाएँगे.

3) सभा स्थल, पब्लिक पार्क, सेक्टर 21 डी को 'अमर शहीद क्रांतिवीर चंद्रशेखर आज़ाद पार्क' घोषित करने और उसके मध्य उनकी शानदार प्रतिमा प्रतिष्ठित की जाए. इस सम्बन्ध में फरीदाबाद नगर निगम आयुक्त को ज्ञापन दिया जाएगा और उसके कार्यान्वयन के लिए सेक्टर के सभी निवासियों से संपर्क किया जाएगा.

